

08 मार्च 2024 : समाचार विश्लेषण

A. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 1 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

B. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

सामाजिक न्याय:

1. महिलाओं की कार्य भागीदारी में गिरावट और वृद्धि:
2. निर्माण कार्य में महिलाओं का बोझ:
3. स्वास्थ्य अनुसंधान में लिंग अंतर को पाटना:

राजव्यवस्था:

1. सेना विवाद: सुप्रीम कोर्ट ने पूछा, क्या महाराष्ट्र स्पीकर ने फैसले का खंडन किया?

C. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

**D. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 4 से संबंधित:**

**आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।**

**E. संपादकीय:**

**विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी:**

1. सर्वाइकल कैंसर मुक्त भविष्य की दिशा में एक साहसिक कदम:

**सामाजिक न्याय:**

1. "महिलाओं की रोजगार शक्ति में वृद्धि" का निर्धारक:

**F. प्रीलिम्स तथ्य:**

1. केंद्र 80 सुदूर आदिवासी गांवों में इंटरनेट उपलब्ध कराने के लिए इसरो की मदद लेगा:
2. आईएनएस कोलकाता ने अदन की खाड़ी में फंसे जहाजों की सहायता की; चालक दल के 21 सदस्यों को बचाया:
3. केरल मानव-पशु संघर्ष को रोकने के लिए दीर्घकालिक, अल्पकालिक उपाय लेकर आया:

**G. महत्वपूर्ण तथ्य:**

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

H. UPSC प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

I. UPSC मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

महिलाओं की कार्य भागीदारी में गिरावट और वृद्धि:

सामाजिक न्याय:

विषय: स्वास्थ्य, शिक्षा, मानव संसाधन से संबंधित सामाजिक क्षेत्र/सेवाओं के विकास और प्रबंधन से संबंधित मुद्दे।

मुख्य परीक्षा: महिलाओं की कार्य भागीदारी के मुद्दे।

संदर्भ:

- भारत में महिलाओं के रोजगार में रुझानों के आसपास की चर्चा काफी बड़ी बहस का मुद्दा बन गई है, जो अक्सर गरीबी पर चर्चा के समानांतर होती है।
- हालांकि, गरीबी मापन की महत्वपूर्ण जांच की जाती है, लेकिन रोजगार मापन पर समान ध्यान नहीं दिया जाता है। यह विसंगति महिलाओं की श्रम शक्ति भागीदारी को समझने की जटिलता को रेखांकित करती है, जिसने पिछले कुछ वर्षों में उल्लेखनीय उतार-चढ़ाव प्रदर्शित किया है।

दो विरोधाभासी आख्यान:

- निराशावादी परिप्रेक्ष्य: महिलाओं की कार्य भागीदारी में गिरावट को नौकरी की उपलब्धता में कमी के संकेत के रूप में देखा जाता है, जिसके बाद वृद्धि को गरीबी के संकेत के रूप में देखा जाता है।

- आशावादी परिप्रेक्ष्य: महिलाओं की कार्य भागीदारी में प्रारंभिक गिरावट का कारण समृद्धि में सुधार है, जिससे महिलाओं को पारिवारिक जिम्मेदारियों को प्राथमिकता देने की अनुमति मिलती है, जिसके बाद नौकरी के अवसरों में वृद्धि परिलक्षित होती है।

### रुझानों का परीक्षण:

- विशेष रूप से 25-59 आयु वर्ग में महिलाओं की कार्य भागीदारी के विश्लेषण से महत्वपूर्ण उतार-चढ़ाव का पता चलता है जो मुख्य रूप से पारिवारिक खेतों पर काम में बदलाव से प्रेरित है।
- महिलाओं की कार्य भागीदारी को सटीक रूप से मापने में चुनौतियाँ सर्वेक्षण पद्धतियों से उत्पन्न होती हैं जो ग्रामीण महिलाओं की सूक्ष्म गतिविधियों को पकड़ने के लिए संघर्ष करती हैं, जिससे रिपोर्ट किए गए आंकड़ों में विसंगतियाँ पैदा होती हैं।
- सांख्यिकीय सर्वेक्षणों की गिरती गुणवत्ता विश्लेषण को और अधिक जटिल बना देती है, हाल ही में डेटा गुणवत्ता पर ध्यान देने से संभावित रूप से रिपोर्ट किए गए आंकड़े बढ़ गए हैं।

### विपरीत तर्क:

- कुछ लोग महिलाओं के कृषि कार्य में वृद्धि का श्रेय आर्थिक बदलावों को देते हैं, जैसे कि पुरुषों का कृषि क्षेत्र से बाहर हो जाना, इस तर्क का विरोध महिला कार्य भागीदारी में गिरावट की अवधि के दौरान कृषि में पुरुष स्व-रोजगार में मामूली गिरावट से किया जाता है।

### भावी कदम:

- महिलाओं के कृषि कार्य में उतार-चढ़ाव के कारणों पर बहस करने के बजाय, कृषि के बाहर महिलाओं के अवसरों का विस्तार करने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए, विशेष रूप से मजदूरी रोजगार और छोटे व्यवसाय के स्वामित्व के क्षेत्र में।

### सारांश:

- भारत में महिलाओं की कार्य भागीदारी में उतार-चढ़ाव श्रम बल की गतिशीलता को समझने

की जटिलता और विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों को सटीक रूप से मापने में निहित चुनौतियों को रेखांकित करता है। इन उतार-चढ़ाव के कारणों पर बहस में उलझने के बजाय, नीति निर्माताओं को कृषि के बाहर महिलाओं के अवसरों का विस्तार करने के प्रयासों को प्राथमिकता देनी चाहिए, जिससे आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा मिले और समावेशी विकास को बढ़ावा मिले।

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

निर्माण कार्य में महिलाओं का बोझ:

सामाजिक न्याय:

विषय: स्वास्थ्य, शिक्षा, मानव संसाधन से संबंधित सामाजिक क्षेत्र/सेवाओं के विकास और प्रबंधन से संबंधित मुद्दे।

मुख्य परीक्षा: निर्माण क्षेत्र में महिलाओं द्वारा सामना किये जाने वाले मुद्दे।

संदर्भ:

- श्रम बल में महिलाओं की कम भागीदारी भारत में एक महत्वपूर्ण मुद्दा बना हुआ है, जो न केवल उनकी रोजगार दर बल्कि उनके काम की गुणवत्ता की भी जांच करता है।
- निर्माण क्षेत्र, जिसे अक्सर महिलाओं के रोजगार पर चर्चा में अनदेखा किया जाता है, विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाली समुदायों की प्रवासी महिलाओं के लिए एक महत्वपूर्ण नियोक्ता के रूप में कार्य करता है।

काम का दोहरा बोझ:

- समय आवंटन: निर्माण क्षेत्र में महिलाओं को सवैतनिक रोजगार और अवैतनिक घरेलू काम के दोहरे बोझ का सामना करना पड़ता है, दोनों गतिविधियों पर पर्याप्त समय खर्च करना पड़ता है।
- इसमें बच्चों की देखभाल की ज़िम्मेदारियाँ शामिल हैं, जिसके लिए अक्सर एक साथ कई कार्यों में संलग्न होने की आवश्यकता होती है।

- कार्यस्थल की चुनौतियाँ: निर्माण क्षेत्र में नियोक्ता अक्सर न्यूनतम वेतन नियमों से बचने के लिए कार्यों को विभाजित करके महिलाओं के श्रम का शोषण करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप पर्याप्त सुरक्षा उपायों के बिना उच्च तीव्रता, श्रमसाध्य काम होता है।
- महिलाओं को अक्सर प्रति घंटा वेतन के बजाय पूरे किए गए काम की मात्रा के आधार पर भुगतान किया जाता है।

### चुनौतियाँ एवं अवसर:

- प्रौद्योगिकी और स्वचालन: निर्माण में स्वचालन बढ़ने से श्रम-केंद्रित कार्यों में महिलाओं के लिए नौकरी के अवसर कम हो सकते हैं।
- हालांकि, कौशल पहल महिलाओं को इस क्षेत्र के भीतर उच्च गुणवत्ता वाले, बेहतर वेतन वाले काम में शामिल होने के लिए सशक्त बना सकती है।
- नियोक्ता की धारणाएँ: कौशल विकास की संभावनाओं के बावजूद, उपकरण और मशीनरी के संचालन में उनकी क्षमताओं के बारे में धारणाओं का हवाला देते हुए, नियोक्ता अक्सर महिलाओं को प्रशिक्षित करने में झिझकते हैं।
- सामाजिक सुरक्षा: ऑन-साइट चाइल्डकैअर सुविधाओं सहित सामाजिक सुरक्षा उपायों का प्रावधान, महिलाओं के अवैतनिक चाइल्डकैअर जिम्मेदारियों के बोझ को कम कर सकता है, जिससे भुगतान किए गए रोजगार पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जा सकता है। (कार्यस्थल पर डेकेयर (ऑन-साइट डेकेयर सुविधा) एक विशेष चाइल्डकैअर केंद्र है जो एक कॉर्पोरेट या व्यावसायिक संगठन के परिसर में स्थापित किया जाता है।)
- कौशल प्रशिक्षण: निर्माण क्षेत्र में महिलाओं की जरूरतों के अनुरूप कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों में निवेश से उनकी रोजगार क्षमता बढ़ सकती है और उच्च गुणवत्ता वाली नौकरियों तक पहुंच संभव हो सकती है।

- कार्यस्थल सुरक्षा: महिलाओं को श्रम-गहन कार्यों से जुड़े व्यावसायिक खतरों से बचाने के लिए कार्यस्थल सुरक्षा मानकों को सुनिश्चित करना और आवश्यक सुरक्षा उपकरण प्रदान करना आवश्यक है।

#### **सारांश:**

- निर्माण क्षेत्र, महिलाओं के एक महत्वपूर्ण नियोक्ता के रूप में, महिला श्रम बल के एक बड़े हिस्से, विशेष रूप से प्रवासी महिलाओं, को उत्पादक भुगतान वाले काम में समाहित करने की अपार क्षमता रखता है।

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

स्वास्थ्य अनुसंधान में लिंग अंतर को पाटना:

सामाजिक न्याय:

विषय: स्वास्थ्य, शिक्षा, मानव संसाधन से संबंधित सामाजिक क्षेत्र/सेवाओं के विकास और प्रबंधन से संबंधित मुद्दे।

मुख्य परीक्षा: स्वास्थ्य अनुसंधान में लैंगिक अंतर।

#### **संदर्भ:**

- विश्व स्तर पर स्वास्थ्य समानता हासिल करने के लिए महिलाओं के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना अनिवार्य है। दुनिया की लगभग आधी आबादी शामिल होने के बावजूद, महिलाओं को ऐतिहासिक रूप से स्वास्थ्य देखभाल में गहरे पूर्वाग्रहों का सामना करना पड़ता है, उनकी स्वास्थ्य संबंधी ज़रूरतें अक्सर स्त्री रोग और प्रजनन संबंधी मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के कारण प्रभावित होती हैं।

#### **ऐतिहासिक पूर्वाग्रह और असमानताएँ:**

- चिकित्सा अनुसंधान पूर्वाग्रह: पारंपरिक चिकित्सा अनुसंधान ने पुरुष शरीर को मानक के रूप में समर्थन दिया है, जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं के स्वास्थ्य में असंगत जोखिम और असमानताएँ हैं।

- डेटा संग्रह में प्रणालीगत पूर्वाग्रह: डेटा संग्रह में पक्षपात असमानताओं को कायम रखता है, जिससे गलत निदान, अप्रभावी उपचार और महिलाओं को अनावश्यक पीड़ा होती है।

### लैंगिक अंतर को संबोधित करने का महत्व:

- वैश्विक मान्यता: विश्व आर्थिक मंच (World Economic Forum's ) की 'महिला स्वास्थ्य अंतर को समाप्त करना' जैसी रिपोर्टें स्वास्थ्य अनुसंधान, वित्त पोषण और नीति निर्धारण में लैंगिक असमानताओं को दूर करने के लिए वैश्विक प्रयासों की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालती हैं।
- भारतीय संदर्भ: भारतीय आबादी में आनुवंशिक विविधताएं स्वास्थ्य देखभाल अनुसंधान और नीति निर्माण में लिंग-संवेदनशील दृष्टिकोण के महत्व को रेखांकित करती हैं।

### समाधान:

- नैदानिक परीक्षणों में लिंग विश्लेषण: नैदानिक परीक्षणों को प्रभावी ढंग से उपचार के लिए लिंग-विशिष्ट निष्कर्षों का विश्लेषण और रिपोर्ट करना चाहिए।
- दवा लेबल पर लैंगिक भेद को शामिल करना: गर्भावस्था के दौरान लिंग अंतर और सुरक्षित उपयोग पर जानकारी प्रदान करना स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं और रोगियों को सूचित निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाता है।
- क्लिनिकल परीक्षणों में महिलाओं की भर्ती: विभिन्न आबादी में उपचार की प्रभावकारिता को समझने के लिए क्लिनिकल परीक्षणों में महिलाओं का पर्याप्त प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना आवश्यक है।
- लिंग लेंस के साथ डेटा का विश्लेषण: लिंग लेंस के माध्यम से डेटा का विश्लेषण करने से स्वास्थ्य देखभाल रणनीतियों को परिष्कृत करने के लिए महत्वपूर्ण बारीकियों का पता चलता है।
- लिंग (Sex) और लैंगिकता (Gender) पर सटीक शब्दावली को अपनाना: स्पष्ट और सटीक भाषा समावेशिता और प्रभावी स्वास्थ्य देखभाल संचार को बढ़ावा देती है।



**अनुसंधान में महिलाओं को शामिल करने का महत्व:**

- समृद्ध अंतर्दृष्टि: महिलाओं की अद्वितीय अंतर्दृष्टि और अनुभव अनुसंधान को समृद्ध करते हैं, स्वास्थ्य देखभाल में अधिक समावेशी, महिला-केंद्रित परिप्रेक्ष्य को बढ़ावा देते हैं।
- वन-साइज-फिट्स -आल वाले उपयुक्त दृष्टिकोण को खत्म करना: अनुसंधान में महिलाओं को शामिल करने से अधिक सूक्ष्म, प्रभावी स्वास्थ्य देखभाल समाधानों के विकास की अनुमति मिलती है जो सभी को लाभान्वित करते हैं।

**सारांश:**

- स्वास्थ्य देखभाल पहुंच और परिणामों में समानता और निष्पक्षता पर आधारित भविष्य के निर्माण के लिए स्वास्थ्य अनुसंधान और अभ्यास में लिंग अंतर को पाटना आवश्यक है। यह लिंग से ऊपर उठकर सभी को समान और प्रभावी ढंग से सेवा देने के लिए स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों को नया आकार देता है।

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

सेना विवाद: सुप्रीम कोर्ट ने पूछा, क्या महाराष्ट्र स्पीकर ने फैसले का खंडन किया?

राज्यवस्था:

विषय: विभिन्न संवैधानिक निकायों की शक्तियाँ, कार्य और जिम्मेदारियाँ।

मुख्य परीक्षा: स्पीकर की शक्तियों से जुड़े मुद्दे।

**संदर्भ:**

- महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के गुट को "वास्तविक" शिवसेना घोषित करने के विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर के फैसले से जुड़े हालिया विवाद ने विधानसभा अध्यक्ष के न्यायिक मिसाल की पालना पर सवाल खड़े कर दिए हैं।
- यह मुद्दा संविधान की व्याख्या और विधान सभा के भीतर राजनीतिक गुटों की प्रामाणिकता निर्धारित करने में अध्यक्ष की भूमिका से संबंधित है।

### समस्याएँ:

- न्यायिक मिसाल के साथ विरोधाभास: सुप्रीम कोर्ट सवाल करता है कि क्या स्पीकर नार्वेकर ने प्रामाणिक राजनीतिक दल के निर्धारण के लिए 'विधायी बहुमत' को एक मानदंड के रूप में मानते हुए पिछले संविधान पीठ के फैसले का खंडन किया था।

### अध्यक्ष की भूमिका की व्याख्या:

- मुद्दे की जड़ गुटीय विवादों के बीच वास्तविक राजनीतिक दल को पहचानने में अध्यक्ष के विवेक में निहित है, विशेष रूप से विधायी बहुमत बनाम अन्य कारकों को दिए गए महत्व के संबंध में।

### महत्व:

- संवैधानिक निहितार्थ: यह मामला स्पीकर की भूमिका और लोकतांत्रिक ढांचे के भीतर शक्तियों के पृथक्करण (separation of powers) को नियंत्रित करने वाले संवैधानिक सिद्धांतों पर प्रकाश डालता है।
- राजनीतिक स्थिरता: महाराष्ट्र में राजनीतिक स्थिरता बनाए रखने और लोकतांत्रिक प्रक्रिया की अखंडता को बनाए रखने के लिए इस विवाद का समाधान महत्वपूर्ण है।

### समाधान:

- न्यायिक मिसाल का पालन: पिछले न्यायिक निर्णयों द्वारा निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार अध्यक्ष की अनुपालना के महत्व पर जोर दें, विशेष रूप से किसी दल की विधायी और राजनीतिक शाखाओं के बीच का अंतर पर।
- पारदर्शी मानदंड: राजनीतिक गुटों की प्रामाणिकता निर्धारित करने के लिए पारदर्शी और सुसंगत मानदंडों की वकालत करना, यह सुनिश्चित करना कि निर्णय व्यक्तिपरक विचारों के बजाय वस्तुनिष्ठ मापदंडों पर आधारित हों।

**सारांश:**

- सेना विवाद लोकतांत्रिक व्यवस्था के भीतर विधायी प्राधिकार और न्यायिक निरीक्षण के बीच नाजुक संतुलन को रेखांकित करता है। स्पीकर नार्वेकर के फैसले की सर्वोच्च न्यायालय की जांच संवैधानिक सिद्धांतों को बनाए रखने और लोकतांत्रिक मानदंडों की सुरक्षा में न्यायपालिका की भूमिका की याद दिलाती है।

**संपादकीय-द हिन्दू**

संपादकीय:

सर्वाइकल कैंसर मुक्त भविष्य की दिशा में एक साहसिक कदम:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी:

विषय: विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में विकास।

मुख्य परीक्षा: सर्वाइकल कैंसर मुक्त भविष्य की दिशा में नए कदम।

संदर्भ:

- भारत के अंतरिम केंद्रीय बजट 2024-25 (Union Budget 2024-25) ने महिलाओं के स्वास्थ्य पर अपने महत्वपूर्ण फोकस के लिए ध्यान आकर्षित किया है, विशेष रूप से लड़कियों के बीच एचपीवी टीकाकरण को प्रोत्साहित करने के उपायों की शुरुआत के माध्यम से।
- यह साहसिक कदम गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर से निपटने के वैश्विक प्रयासों के साथ संरेखित होता है, जो महिलाओं के कल्याण को प्राथमिकता देने में एक महत्वपूर्ण क्षण है।

समस्याएँ:

- सर्वाइकल कैंसर का बोझ: स्वास्थ्य देखभाल में प्रगति के बावजूद, सर्वाइकल कैंसर भारत में महिलाओं के लिए एक प्रमुख स्वास्थ्य चिंता बना हुआ है, जिसमें घटनाएँ और मृत्यु दर अधिक हैं।

- वैश्विक लक्ष्य और कार्यक्रम: विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organization) ने वर्ष 2030 तक सर्वाइकल कैंसर से निपटने के लिए महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं, जिसमें लड़कियों के लिए एचपीवी टीकाकरण और महिलाओं के लिए सर्वाइकल कैंसर की जांच शामिल है।

#### महत्व:

- वैश्विक सफलता की कहानियाँ: स्कॉटलैंड, ऑस्ट्रेलिया और रवांडा जैसे अंतर्राष्ट्रीय उदाहरण, सर्वाइकल कैंसर की घटनाओं को कम करने में एचपीवी टीकाकरण की प्रभावशीलता पर प्रकाश डालते हैं।
- क्षेत्रीय प्रगति: दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र के भीतर भूटान और सिक्किम जैसे देशों ने एचपीवी टीकाकरण कार्यक्रमों को लागू करने में सफलता का प्रदर्शन किया है, जो इस क्षेत्र में व्यापक प्रभाव की संभावना को दर्शाता है।
- भारत की स्वदेशी वैक्सीन: सेरवावैक (Cervavac) का विकास पहुंच और सामर्थ्य प्रदान करता है, जिससे एचपीवी संक्रमण और गर्भाशय ग्रीवा कैंसर से निपटने की भारत की क्षमता में और वृद्धि होती है।

#### समाधान:

- संचार रणनीति: प्रभावी संचार, जैसा कि सिक्किम के टीकाकरण अभियान द्वारा उदाहरण दिया गया है, मिथकों को दूर करने और समुदायों के बीच विश्वास बनाने में महत्वपूर्ण है।
- समावेशी टीकाकरण: टीकाकरण कार्यक्रमों में किशोर लड़कों को शामिल करने से एचपीवी संचरण पर प्रभाव अधिकतम हो सकता है।
- साक्ष्य को अपनाना: एकल-खुराक एचपीवी टीकाकरण की प्रभावशीलता को पहचानने से नीतिगत निर्णयों को सूचित किया जा सकता है और संसाधनों का अनुकूलन किया जा सकता है।

- चुनौतियों का समाधान: टीके की झिझक पर काबू पाने और समान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए सामुदायिक भागीदारी, जागरूकता अभियान और यू-विन (U-WIN) पोर्टल जैसे तकनीकी उपकरणों का लाभ उठाने की आवश्यकता है।

**सारांश:**

- अंतरिम केंद्रीय बजट में एचपीवी टीकाकरण के लिए भारत की प्रतिबद्धता महिलाओं के स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण प्रगति की शुरुआत करती है। वैश्विक सफलताओं से प्रेरणा लेकर और अपने टीकाकरण बुनियादी ढांचे का लाभ उठाकर, भारत सर्वाइकल कैंसर से निपटने में पर्याप्त प्रगति करने के लिए तैयार है।

"महिलाओं की रोजगार शक्ति में वृद्धि" का निर्धारक:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

सामाजिक न्याय:

विषय: स्वास्थ्य, शिक्षा, मानव संसाधन से संबंधित सामाजिक क्षेत्र/सेवाओं के विकास और प्रबंधन से संबंधित मुद्दे।

मुख्य परीक्षा: रोजगार/नौकरी बाजार में महिलाओं के लिए अवसर और चुनौतियाँ।

**संदर्भ:**

- भारत की आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए अर्थव्यवस्था और श्रम बाजार में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की अनिवार्यता को लेकर सामाजिक वैज्ञानिकों, सरकारों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के बीच आम सहमति बढ़ रही है।
- इस मान्यता के बावजूद, एशिया के अन्य देशों की तुलना में भारत में कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी उल्लेखनीय रूप से कम है।

- इस विसंगति को विभिन्न कारकों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जिसमें पितृसत्ता समाज और अर्थव्यवस्था के भीतर महिलाओं की भूमिकाओं को आकार देने वाले अंतर्निहित निर्धारक के रूप में उभर रही है।

### समस्याएँ:

- मूल कारण: पितृसत्ता: पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में पुरुष प्रभुत्व की विशेषता वाली पितृसत्ता, श्रम बाजार में महिलाओं की भागीदारी में प्राथमिक बाधा के रूप में कार्य करती है।
- अवैतनिक घरेलू कार्य: महिलाओं पर अवैतनिक घरेलू काम के लिए अनुपातहीन जिम्मेदारियों का बोझ डाला जाता है, जिससे उन्हें सीमित आर्थिक एजेंसी और गतिशीलता के साथ निम्न भूमिकाओं में धकेल दिया जाता है।
- रोजगार में लैंगिक विकल्प: महिलाओं के श्रम बाजार के विकल्प सामाजिक अपेक्षाओं और घरेलू दायित्वों से प्रभावित होते हैं, जिससे लैंगिक रुढ़िवादिता और व्यावसायिक अलगाव कायम रहता है।

### महत्व:

- आर्थिक उत्पादकता: महिलाओं की श्रम क्षमता का कम उपयोग समग्र आर्थिक उत्पादकता और विकास को बाधित करता है, जिससे इस अव्यक्त कार्यबल को अनलॉक करने के लिए हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।
- लैंगिक समानता: लैंगिक समानता हासिल करने और बड़े पैमाने पर घरों और समाज के भीतर पितृसत्तात्मक संरचनाओं को खत्म करने के लिए महिलाओं की श्रम बल भागीदारी में बाधाओं को दूर करना महत्वपूर्ण है।

### समाधान:

- घरेलू कार्य का पुनर्वितरण: घरों में अवैतनिक घरेलू काम और देखभाल की जिम्मेदारियों को पुनर्वितरित करने के प्रयासों से महिलाओं पर बोझ कम हो सकता है और श्रम बाजार में उनकी अधिक भागीदारी संभव हो सकती है।

#### अवसंरचनात्मक समर्थन:

- संद्वार: बुनियादी ढांचागत सहायता प्रदान करना, जैसे कि ईंधन-कुशल स्टोव और घर-घर पानी की आपूर्ति तक पहुंच, महिलाओं के घरेलू काम की उत्पादकता को बढ़ा सकती है और समय की कमी को कम कर सकती है।
- अवैतनिक कार्य को मुख्यधारा में लाना: सरकार या नागरिक समाज के हस्तक्षेप के माध्यम से बच्चों की देखभाल और बुजुर्गों की देखभाल जैसी कुछ अवैतनिक देखभाल जिम्मेदारियों को मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था में स्थानांतरित करने से महिलाओं का शैक्षिक और आर्थिक गतिविधियों के लिए समय निकल सकता है।

#### लैंगिक समानता को बढ़ावा देना:

- घरेलू और आर्थिक दोनों क्षेत्रों में पुरुषों और महिलाओं के लिए समान अवसरों को बढ़ावा देने के लिए घरों में लैंगिक समानता को बढ़ावा देना आवश्यक है। इसमें पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को चुनौती देना और घरों के भीतर महिलाओं की अधीनता को खत्म करना शामिल है।

#### सारांश:

- श्रम बाजार में महिलाओं की कम भागीदारी को संबोधित करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो लैंगिक भूमिकाओं और अपेक्षाओं को आकार देने वाले पितृसत्तात्मक मानदंडों का सामना करे। अवैतनिक घरेलू काम का पुनर्वितरण, ढांचागत सहायता प्रदान करके और लैंगिक समानता को बढ़ावा देकर, भारत अधिक महिला कार्यबल भागीदारी के लिए अनुकूल माहौल बना सकता है।

#### प्रीलिम्स तथ्य:



### 1. केंद्र 80 सुदूर आदिवासी गांवों में इंटरनेट उपलब्ध कराने के लिए इसरो की मदद लेगा:

#### संदर्भ:

- जनजातीय मामलों का मंत्रालय झारखंड, मध्य प्रदेश, ओडिशा और महाराष्ट्र के लगभग 80 दूरदराज के आदिवासी गांवों में इंटरनेट सेवाएं प्रदान करने के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के साथ सहयोग करने की योजना बना रहा है।
- इस पहल का उद्देश्य डिजिटल विभाजन (digital divide) को पाटना और शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और ई-गवर्नेंस जैसी आवश्यक सेवाओं तक पहुंच को सक्षम करके आदिवासी समुदायों को सशक्त बनाना है।

#### इसरो के साथ सहयोग:

- वी-सैट स्टेशनों की तैनाती: इसरो भौगोलिक रूप से दूरदराज और दुर्गम आदिवासी गांवों में वी-सैट (बहुत छोटा एपर्चर टर्मिनल) स्टेशन तैनात करेगा।
- समझौता ज्ञापन (एमओयू): इसरो प्रमुख एस. सोमनाथ ने सहयोग की पुष्टि की और कहा कि इंटरनेट, चिकित्सा और शैक्षिक कनेक्टिविटी सहित पायलट कनेक्टिविटी सेवाएं प्रदान करने के लिए जल्द ही एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जाएंगे।

#### अन्य प्रस्तावों पर की गई चर्चा:

- प्रख्यात संस्थानों के साथ परियोजनाएँ: एम्स दिल्ली, आईआईटी दिल्ली, आईआईएम कलकत्ता और आईआईएससी बेंगलुरु जैसे संस्थानों के साथ परियोजनाओं के प्रस्तावों पर चर्चा की गई।
- स्वास्थ्य अनुसंधान एवं प्रशिक्षण: सिकल सेल एनीमिया सहित जनजातीय स्वास्थ्य मुद्दों पर उन्नत अनुसंधान के लिए एम्स दिल्ली के साथ साझेदारी, और जनजातीय क्षेत्रों में चिकित्सा कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।



- प्रौद्योगिकी और उद्यमिता: आईआईटी दिल्ली और आईआईएम कोलकाता के सहयोग से उपयुक्त प्रौद्योगिकी और उद्यमिता के लिए एक विशेष विभाग स्थापित करने की योजना है।
- सेमीकंडक्टर में प्रशिक्षण सुविधा: आदिवासी छात्रों के लिए सेमीकंडक्टर पाठ्यक्रमों की पेशकश करने वाली एक प्रशिक्षण सुविधा स्थापित करने के लिए आईआईएससी बंगलुरु के साथ सहयोग करने का प्रस्ताव।

#### महत्व:

- डिजिटल विभाजन को पाटना: दूरदराज के आदिवासी गांवों तक इंटरनेट पहुंच प्रदान करने से कनेक्टिविटी और आवश्यक सेवाओं तक पहुंच बढ़ती है, जो सामाजिक-आर्थिक विकास में योगदान देती है।

#### जनजातीय समुदायों को सशक्त बनाना:

- शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और ई-गवर्नेंस तक पहुंच आदिवासी समुदायों को सशक्त बनाती है, जिससे वे आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेने में सक्षम होते हैं।

#### 2. आईएनएस कोलकाता ने अदन की खाड़ी में फंसे जहाजों की सहायता की; चालक दल के 21 सदस्यों को बचाया:

#### संदर्भ:

- भारतीय नौसेना के विध्वंसक जहाज आईएनएस कोलकाता ने हाल ही में अदन की खाड़ी में व्यापारिक जहाजों पर मिसाइल/ड्रोन हमलों के दो उदाहरणों का जवाब दिया। एक घटना में, युद्धपोत ने बारबाडोस के झंडे वाले बल्क कैरियर एमवी टू कॉन्फिडेंस से चालक दल के 21 सदस्यों को बचाया, जबकि दूसरे में, इसने लाइबेरिया के झंडे वाले कंटेनर जहाज एमएससी स्काई ॥ को सहायता प्रदान की।

#### एमवी टू कॉन्फिडेंस के लिए बचाव अभियान:

- घटना का विवरण: एमवी टू कॉन्फिडेंस को 6 मार्च को अदन से लगभग 55 एनएम दक्षिण पश्चिम में एक ड्रोन/मिसाइल ने टक्कर मार दी थी, जिसके परिणामस्वरूप जहाज पर आग लग गई और चालक दल के कुछ सदस्य गंभीर रूप से घायल हो गए।
- आईएनएस कोलकाता की प्रतिक्रिया: समुद्री सुरक्षा अभियानों के लिए तैनात युद्धपोत घटनास्थल पर पहुंचा और एक भारतीय नागरिक सहित 21 चालक दल के सदस्यों को बचाया, घायल कर्मियों को महत्वपूर्ण चिकित्सा सहायता प्रदान की।
- जिबूती के लिए निकासी: गंभीर रूप से घायलों सहित बचाए गए दल को आगे की चिकित्सा सहायता के लिए जिबूती ले जाया गया।

#### **एमएससी स्काई II को सहायता:**

- 4 मार्च को, एमएससी स्काई II, एक लाइबेरियाई झंडे वाला कंटेनर पोत, अदन के दक्षिण-पूर्व में लगभग 90 एनएम से टकरा गया था।

#### **आईएनएस कोलकाता की प्रतिक्रिया:**

- सहायता के लिए अनुरोध प्राप्त होने पर, आईएनएस कोलकाता को घटनास्थल की ओर मोड़ दिया गया, अग्निशमन सहायता प्रदान की गई और जहाज को जिबूती के क्षेत्रीय जल क्षेत्र में ले जाया गया।
- सुरक्षा उपाय: आईएनएस कोलकाता की एक विशेषज्ञ अग्निशमन टीम और विस्फोटक आयुध निपटान टीम बची हुई आग को बुझाने और बचे हुए जोखिमों का आकलन करने में सहायता के लिए जहाज पर सवार हुई।

#### **समस्याएँ:**

- सुरक्षा संबंधी चिंताएँ: ये घटनाएँ अदन की खाड़ी से होकर गुजरने वाले व्यापारिक जहाजों के सामने आने वाली सुरक्षा चुनौतियों और समुद्री सुरक्षा उपायों को बढ़ाने की आवश्यकता पर प्रकाश डालती हैं।

- चालक दल की सुरक्षा: समुद्री डकैती और सशस्त्र हमलों की आशंका वाले समुद्री क्षेत्रों में बढ़ते खतरों के बीच व्यापारिक जहाजों पर सवार चालक दल के सदस्यों की सुरक्षा और भलाई एक प्राथमिकता बनी हुई है।

### 3. केरल मानव-पशु संघर्ष को रोकने के लिए दीर्घकालिक, अल्पकालिक उपाय लेकर आया:

#### संदर्भ:

- केरल सरकार ने वायनाड जिले में विशेष रूप से जंगली हाथियों के साथ मानव-पशु संघर्ष (man-animal conflict) की बढ़ती घटनाओं को कम करने के लिए दीर्घकालिक और अल्पकालिक दोनों उपायों के एक व्यापक सेट का अनावरण किया है।
- इन उपायों का उद्देश्य मानव बस्तियों की रक्षा करना, वन्यजीव आवासों को बढ़ाना और मनुष्यों और जानवरों के बीच टकराव को कम करना है।

#### दीर्घकालिक उपाय:

- स्मार्ट हाथी बाड़: जंगली हाथियों को मानव बस्तियों में अतिक्रमण करने से रोकने के लिए स्मार्ट हाथी बाड़ का कार्यान्वयन।
- अंडरग्रोथ हटाना (Undergrowth Removal): रोज़गार गारंटी योजना से श्रमिकों का उपयोग निजी संपदा को साफ करने, जंगली जानवरों के छिपने के संभावित स्थानों को कम करने के लिए किया जाता है। (Undergrowth-झाड़ियाँ, गोल झाड़ियाँ और छोटे पेड़ जो बड़े पेड़ों के नीचे उगते हैं उन्हें अंडरग्रोथ या अंडरब्रश कहा जाता है।)
- आक्रामक पौधों का उन्मूलन: प्राकृतिक वनस्पति के पुनर्जनन में सहायता के लिए सेन्ना जैसी आक्रामक पौधों की प्रजातियों का उन्मूलन ( [invasive plant species](#)) और नीलगिरी और बबूल के बागानों को हटाना।
- वन्यजीव आवास सुधार: मानव और जानवरों के बीच संघर्ष को कम करने के लिए वन्यजीव आवास में सुधार लाने के उद्देश्य से गतिविधियाँ।

- जानवरों के प्रवेश को रोकने के लिए बाड़ लगाना: जंगली जानवरों को मानव बस्तियों में प्रवेश करने से रोकने के लिए बाड़ लगाना, इस प्रकार जीवन और संपत्ति की सुरक्षा करना।

### अल्पकालिक उपाय:

- अंतर-राज्य समन्वय समिति की बैठकें: मानव-पशु संघर्ष से संबंधित तत्काल मुद्दों के समाधान के लिए अंतर-राज्य समन्वय समिति की नियमित बैठकें।
- कमांड कंट्रोल सेंटर: जंगली जानवरों की घुसपैठ की घटनाओं पर नजर रखने और प्रतिक्रिया देने के लिए वायनाड में एक कमांड कंट्रोल सेंटर की स्थापना।
- प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली को मजबूत करना: लोगों को उनके आसपास जंगली जानवरों की उपस्थिति के बारे में सचेत करने के लिए प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली को बढ़ाना।
- ड्रोन निगरानी: जंगली जानवरों की आवाजाही पर नज़र रखने और संभावित संघर्षों को रोकने के लिए निगरानी के लिए ड्रोन की तैनाती।
- पीड़ितों को मुआवजा: जंगली जानवरों के हमलों से प्रभावित पीड़ितों को वित्तीय राहत प्रदान करने के लिए मुआवजे की शीघ्र मंजूरी।
- नया वन स्टेशन: वन्यजीवों की निगरानी और प्रबंधन को बढ़ाने के लिए एक नए वन स्टेशन की स्थापना।
- इकोटूरिज्म स्थलों को बंद करना: मानव-पशु संघर्ष की समस्या कम होने तक वन क्षेत्रों में इकोटूरिज्म स्थलों को अस्थायी रूप से बंद करना।

### समस्याएँ:

- मानव-वन्यजीव संघर्ष: मनुष्यों और जंगली जानवरों के बीच संघर्ष की बढ़ती घटनाएं मानव जीवन और वन्यजीव संरक्षण प्रयासों दोनों के लिए खतरा पैदा करती हैं।

- पर्यावास विखंडन: वन्यजीवों के आवासों में मानव का अतिक्रमण और पर्यावास विखंडन मनुष्यों और जानवरों के बीच संघर्ष को बढ़ा देता है।
- जैव विविधता का नुकसान: मानव-पशु संघर्ष से जैव विविधता (biodiversity) का नुकसान हो सकता है और पारिस्थितिक तंत्र बाधित हो सकता है, जिससे वन्यजीव और मनुष्य दोनों प्रभावित होंगे।

### महत्वपूर्ण तथ्य:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

### UPSC प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

**प्रश्न 1. भारत के प्रवर्तन निदेशालय (ED) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. ईडी भारत के संविधान के तहत स्थापित एक स्वतंत्र निकाय है।
2. यह मुख्य रूप से विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा) और धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) को लागू करने के लिए जिम्मेदार है।
3. ईडी गृह मंत्रालय के अधीन कार्य करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

**उत्तर: b**

**प्रश्न 2. भारत में महिला श्रम बल भागीदारी दर (FLFPR) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. भारत का एफएलएफपीआर पिछले 5 वर्षों में लगातार बढ़ रहा है, जो महिला सशक्तिकरण को दर्शाता है।
2. भारत, दुनिया में सबसे अधिक एफएलएफपीआर में से एक है, जो कार्यबल में महिलाओं की मजबूत उपस्थिति को दर्शाता है।
3. महिलाओं के लिए लक्षित कौशल विकास कार्यक्रम एफएलएफपीआर बढ़ा सकते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) केवल 3
- (d) केवल 1 और 3

उत्तर: d

**प्रश्न 3. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (PMUY) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई) का लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) परिवारों को स्वच्छ खाना पकाने का ईंधन उपलब्ध कराना है।
2. पीएमयूवाई के उद्देश्यों में से एक पारंपरिक खाना पकाने के ईंधन के कारण होने वाले इनडोर वायु प्रदूषण को कम करना है।
3. पीएमयूवाई महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा शुरू की गई एक सामाजिक कल्याण योजना है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2, और 3

उत्तर: a

**प्रश्न 4. भारत के मुख्य न्यायाधीश के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

कथन 1: भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा की जाती है।

कथन 2: भारत के मुख्य न्यायाधीश का कार्यकाल निश्चित है, और यह पाँच वर्ष है।

कथन 3: भारत के मुख्य न्यायाधीश पर संसद के दोनों सदनों के विशेष बहुमत द्वारा महाभियोग लगाया जा सकता है।

इनमें से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) कथन 1 और 2
- (b) कथन 1 और 3
- (c) केवल कथन 2
- (d) केवल कथन 3

उत्तर: b

प्रश्न 5. भारत में, निम्नलिखित में से कौन श्रमिकों को रोजगार देने वाले कारखानों में औद्योगिक विवादों, बंदी, व्यय में कमी और छंटनी पर जानकारी संकलित करता है?

- (a) केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय
- (b) उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग
- (c) श्रम ब्यूरो
- (d) राष्ट्रीय तकनीकी सूचना प्रणाली जनशक्ति

उत्तर: c

UPSC मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

प्रश्न 1. मानव-वन्यजीव संघर्ष तेजी से संरक्षण प्रयासों और मानव सुरक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती बनता जा रहा है, खासकर उन क्षेत्रों में जहां मानव आवास का विस्तार वन्यजीव क्षेत्रों के साथ मिलता है। भारत के विभिन्न हिस्सों में मनुष्यों और वन्यजीवों के बीच बढ़ते संघर्षों के संदर्भ में, इन संघर्षों के अंतर्निहित कारणों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। 15 अंक 250 शब्द (सामान्य अध्ययन - III, पर्यावरण) (Human-wildlife conflicts are increasingly becoming a critical challenge for



conservation efforts and human safety, especially in areas where expanding human habitats intersect with wildlife territories. In the context of the escalating conflicts between humans and wildlife across various parts of India, critically examine the underlying causes of these conflicts. (15 marks, 250 words) [GS-3, Environment]

**प्रश्न 2. महिला श्रम शक्ति भागीदारी को बढ़ाने के लिए भारत सरकार द्वारा शुरू की गई विभिन्न पहलों और योजनाओं के बावजूद, देश को अभी भी अपने श्रम बाजार में एक महत्वपूर्ण लिंग अंतर का सामना करना पड़ रहा है। रोजगार में लैंगिक अंतर को पाटने में इन पहलों की प्रभावशीलता का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। 15 अंक 250 शब्द (सामान्य अध्ययन - II, सामाजिक न्याय)**

(Despite various initiatives and schemes launched by the Government of India to enhance female labour force participation, the country still faces a significant gender gap in its labour market. Critically examine the effectiveness of these initiatives in bridging the gender gap in employment. (15 marks, 250 words) [GS-2, Social Justice])

(नोट: मुख्य परीक्षा के अंग्रेजी भाषा के प्रश्नों पर क्लिक कर के आप अपने उत्तर **BYJU'S** की वेब साइट पर अपलोड कर सकते हैं।)